प्रथम अध्यक्षता संदेश, जनवरी 2016

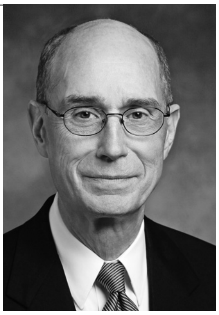

अध्यक्ष हेनरी बी. आइरिंग द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार

उनके लिये खुशी जिनसे हम प्रेम करते हैं

हम सब उनके लिये खुशी चाहते हैं जिनसे हम प्रेम करते हैं, और हम उनके लिये कम से कम दुख चाहते हैं । जब हम मॉरमन की पुस्तक में खुशी—और दुख का वर्णन पढ़ते हैं, तो हमारे हृदय विचलित हो जाते हैं जब हम उनके विषय में सोचते हैं जिनसे हम प्रेम करते हैं । यह खुशी के समय का सच्चा वर्णन है :

‘‘और ऐसा हुआ कि परमेश्वर के उस प्रेम के कारण जो कि लोगों के हृदयों में बसा था, प्रदेश में कोई विवाद नहीं हुआ ।

‘‘और कोई शत्रुता नहीं थी, न ही झगड़ा, न हंगामा, न वेश्यावृत्ति, न झूठ-कपट, न हत्या, और न ही किसी प्रकार की कामुकता थी; और जितने लोग परमेश्वर के हाथों द्वारा रचे गये थे, उन सारे लोगों में निश्चय ही इन लोगों से अधिक कोई भी आनंदमय नहीं था ।’’

हम आगे पढ़ते हैं :

‘‘और वे कितने आशीषित थे ! क्योंकि प्रभु ने उनके सारे कामों में उन्हें आशीषित किया था; हां, वे तब तक आशीषित और समृद्ध होते गए जब तक कि एक सौ दस वर्ष बीत न गए; और मसीह के समय से लेकर पहली पीढ़ी का अंत हो चुका था, और पूरे प्रदेश में कोई विवाद नहीं था’’ (4 नफी 1:15–16, 18) ।

मसीह के प्रेमी शिष्य दूसरों और स्वयं के प्रति इस प्रकार की आशीष के लिये प्रार्थना करते थे । मॉरमन की पुस्तक के वर्णनों और, हम में से बहुतों के लिये, हमारे स्वयं के अनुभवों से, हम जानते हैं कि खुशी का उपहार पाया जा सकता है । हम जानते हैं कि खुशी का मार्ग भली-भांति दर्शाया गया है । हम यह भी जानते हैं कि खुशी को कायम रखना सरल नहीं है जब तक ‘‘परमेश्वर का प्रेम’’ हमारे हृदयों में निवास नहीं करता था, जैसा उद्धारकर्ता से भेंट के बाद नफाइयों के साथ था ।

वह प्रेम नफाइयों के हृदयों में था क्योंकि उन्होंने उस नियम का पालन किया था जिसने इसे संभव किया था । उस नियम का सार प्रभु-भोज प्रार्थनाओं में पाया जाता है, जोकि हमारे प्रेमी स्वर्गीय पिता से दिली याचना से आरंभ होता है । अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के प्रति हृदय के पूर्ण विश्वास में, और गहन प्रेम के साथ हम प्रार्थना करते हैं । हम वास्तविक इच्छा के साथ उसका नाम अपने ऊपर धारण करने, उसे स्मरण करने, और उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करने का निश्चिय करते हैं । अंततः, हम विश्वास करते हैं कि पवित्र आत्मा, परमेश्रत्व का तीसरा सदस्य, हमारे हृदयों को पिता और उसके प्रिय पुत्र की गवाही देते हुए, हमेशा हमारे साथ रहे । (देखें सिऔरअ 20:77, 79)।

पवित्र आत्मा की संगति से, हमारे हृदय बदल सकते हैं ताकि हम अपने स्वर्गीय पिता और प्रभु यीशु मसीह के प्रेम को चाहें और स्वीकार करें । हमारे हृदयों में परमेश्वर के प्रेम को प्राप्त करने का मार्ग सरल है, जिस प्रकार हमारे हृदयों में उस प्रेम को खोने की अनुभूति का मार्ग । उदाहरण के लिये, किसी का स्वर्गीय पिता से कम प्रार्थना करना या पूर्ण दसमांश न देना या परमेश्वर के वचन न पढ़ना या गरीब और जरूरतमंद को अनदेखा करना ।

प्रभु की आज्ञा का पालन न करने का कोई भी चुनाव आत्मा को हमारे हृदयों से चले जाने का कारण बन सकता है । इसके चले जाने से, खुशी समाप्त हो जाती है ।

खुशी जो हम अपने प्रियों के लिये चाहते हैं उनके चुनावों पर निर्भर होती है । चाहे जितना अधिक हम बच्चे, जांचकर्ता, या अपने मित्रों से प्रेम करें, पर हम उन्हें आज्ञाओं का पालन करने के लिये बाध्य नहीं कर सकते ताकि वे पवित्र आत्मा द्वारा उनके हृदयों को छूने और बदलने के योग्य बनें ।

इसलिये सर्वोत्तम मदद जो हम उन्हें दे सकते हैं जिन्हें हम प्रेम करते हैं वे स्वयं अपने चुनावों का ख्याल रखें । अलमा ने इसे एक निमंत्रण देकर किया था जो आप भी दे सकते हैं:

‘‘तुम अपने आपको प्रभु के सामने विनम्र करो, और उसके नाम में बुलाओ, और ध्यान दो और निरंतर प्रार्थना करते रहो, ताकि जितना तुम

सह सको उससे अधिक लालच में न पड़ो, और इस प्रकार विनम्र, कोमल, आज्ञाकारी, धैर्यवान, प्रेम से परिपूर्ण और लंबे समय तक सहनेवाले बनते हुए, पवित्र आत्मा के द्वारा मार्गदर्शित हो ।

‘‘प्रभु पर विश्वास रखते हुए; आशा रखते हुए कि तुम्हें अनंत जीवन मिलेगा; सदैव अपने हृदय में परमेश्वर का प्रेम रखते हुए, ताकि अंतिम दिन तुम उत्कर्ष पा सको और आरामगाह में प्रवेश कर सको’’ (अलमा 13:28–29) ।

मैं प्रार्थना करता हूं कि जिनसे आप प्रेम करते हैं वो स्थाई खुशी के मार्ग का चुनाव करने के प्रेरित निमंत्रण को स्वीकार करें ।

इस संदेश से शिक्षा

अध्यक्ष आईरिंग सीखाते हैं कि जीवन में जो खुशी हम महसूस करते हैं उन निर्णयों पर निर्भर होती है जो हम बनाते हैं । जब आप इस संदेश की चर्चा करते हैं, उन बातों पर विचार करें जो अध्यक्ष आईरिंग बताते हैं हम चुन सकते हैं (जैसे प्रार्थना, कार्य, विश्वास, और वास्तविक इच्छा के साथ स्वयं को दृढ़ करके) हम खुशी के मार्ग पर ले जा सकते हैं । जिन्हें आप सीखाते हैं उन्हें आप दो या तीन कार्य लिखने के लिये कह सकते हैं जो उन्हें ‘‘स्थाई खुशी के मार्ग की ओर’’ अच्छी तरह ले जा सकते हैं ।

युवा

कार्य जो खुशी की ओर ले जाते हैं

अध्यक्ष आईरिंग सीखाते हैं कि ‘‘खुशी जो हम अपने प्रियों के लिये चाहते हैं उनके चुनावों पर निर्भर होती है ।’’

उन चुनावों के प्रभावों के विषय में आप नफी, लमान, और लमुएल के उदाहरणों से पढ़ सकते हैं । लमान और लमुएल बढ़बढ़ाते थे और आज्ञाओं का पालन नहीं करना चाहते थे (देखें 1 नफी 2:12) । परिणामस्वरूप, वे और उनके वंशज श्रापित हुए और प्रभु की उपस्थिति से अलग कर दिये गए थे (देखें 2 नफी 5:20–24) । नफी ने आज्ञा पालन करने का चुनाव किया था (देखें 1 नफी 3:7), और इस कारण से, वह और उसके लोग ‘‘आनंदपूर्वक रहने लगे’’ (2 नफी 5:27) ।

आप धार्मिक और खुश रहने का चुनाव कर सकते हैं । लेकिन आपके आस-पास के लोग हो सकता है फिर भी गलत चुनाव कर सकते हैं जिसके कारण वे दुखी या अशांत हो सकते हैं । यद्यपि वे अपने निर्णय ले सकते हैं, पर आपके उदाहरण उन्हें अच्छा करने के लिये प्रेरित कर सकते हैं । कैसे आपके चुनाव दूसरों के लिये खुशी ला सकते हैं ? अपने परिवार के साथ विभिन्न तरीकों की चर्चा करें जिनसे आप अपने आस-पास के लोगों को सकारात्मकरूप से प्रभावित कर सकते हैं और उन्हें खुशी आनुभव करने में मदद कर सकते हो ।

बच्चे

दयालु चुनौती

जब यीशु अमेरिका महाद्वीप में लोगों से मिला था, उसने उन्हें एक दूसरे से प्रेम करना और दया दिखाना सीखाया था । आप यीशु का अनुसरण करने और दूसरों से प्रेम करने के लिये क्या कर सकते हो ? नीचे प्रत्येक चुनौती को पढ़कर निशान लगाएं ।

☐ जो दुखी है उसे मैं गले लगा सकता हूं ।
☐ मैं किसी की गुप्तरूप से सेवा कर सकता हूं ।
☐ मैं दयालु होने के विषय में सम्मेलन वार्ता पढ़ या देख सकता हूं ।
☐ मैं अपने परिवार के लिये प्राथमिक गीत गा सकता हूं ।
☐ जो उदास दिखता है मैं उसे मुस्कराहट दे सकता हूं ।
☐ मैं ________________________________ कर सकता हूं ।
☐ मैं ________________________________ कर सकता हूं ।

© 2016 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/15 । अनुवाद अनुमतिः 6/15 । *First Presidency Message, January 2016* का अनुवाद । Hindi । 12861 294

भेंट करने वाला शिक्षा संदेश, जनवरी 2016

परिवारः दुनिया के लिये एक घोषणा

प्रार्थनापूर्वक इस सामाग्री को पढ़ें और क्या बांटना है को जानने के लिये खोजें । उद्धारकर्ता का जीवन और सेवाकाई उसमें कैसे आपके विश्वास को बढ़ाता और उन्हें आशीष देता है जिनका आप भेंट करने वाला शिक्षका के द्वारा ध्यान रखते हैं ? अधिक जानकारी के लिए पर जाएं ***reliefsociety.lds.org*** *को देखें ।*

विश्वास, परिवार, सहायता

1995 में महा सहायता संस्था सभा की विषय में, जब अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली (1910–2008) ने पहली बार ‘‘परिवारः दुनिया के लिये एक घोषणा,’’ पढ़ी थी, युवतियों की महा अध्यक्षा, बोनी एल. ऑस्करसन, ने कहा थाः ‘‘हम इस भविष्यदर्शी दस्तावेज के आभारी हैं और इसकी स्पष्टता, सरलता और सच्चाई का आदर करते हैं । … परिवार पर यह घोषणा हमारे लिये संसार की धारणाओं को मापने का हमारा मानदंड बन गया है, और मैं गवाही देती हूं कि इसके नियम … आज भी उतने ही सच्चे हैं जितने वे तब थे जब लगभग 20 साल पहले परमेश्वर के भविष्यवक्ता द्वारा ये हमें दिये गये थे ।’’[1]

‘‘परिवार की घोषणा से,’’ सहायता संस्था की महा अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार कॉरोल एम. स्टीफनस कहती हैं, ‘‘हम सीखते हैं, ‘नश्वरता पूर्व राज्य में आत्मिक पुत्र और पुत्रियां परमेश्वर की अपने अनंत पिता के रूप में जानते और उपासना करते थे’[2] …

‘‘ … हम प्रत्येक परमेश्वर के परिवार से संबंध रखते हैं और हम सब जरूरी हैं ।’’[3]

हम ऐसे समय में रहते हैं जब माता-पिता को अपने घरों और परिवारों की रक्षा करनी चाहिए । ‘‘परिवारः दुनिया के लिये एक घोषणा’’ हमारा मार्गदर्शन कर सकती है ।

अतिरिक्त धर्मशास्त्र

मुसायाह 8:16–17;
सिद्धांत और अनुबंध 1:38

सच्ची कहानियां

‘‘ताओ यूवान ताइवान स्टेक के, ताओ यूवान वार्ड से ली मई चेन हो, ने कहा था घोषणा ने उसे सीखाया था कि पारिवारिक संबंधों से दिव्य गुणों जैसे विश्वास, धैर्य, और प्रेम का विकास करने में मदद मिलती है । ‘जब मैं घोषणा के अनुसार स्वयं में सुधार करने का प्रयास करती हूं, मैं वास्तविक खुशी को अनुभव कर सकती हूं,‘‘ उसने कहा था ।’’[4]

बारबरा थॉमसन, जो उस समय उपस्थित थी जब घोषणा पहली बार पढ़ी गई थी और बाद में उसने सहायता संस्था महा अध्यक्षता में एक सलाहकार के रूप में सेवा की थी, कहा थाः ‘‘मैंने एक क्षण के लिये सोचा [परिवार घोषणा] इसमें मेरे लिये अधिक नहीं है क्योंकि मेरा विवाह नहीं हुआ और कोई बच्चे नहीं थे । लेकिन तुरंत मैंने सोचा, ‘लेकिन यह मेरे लिये है । मैं एक परिवार की सदस्या हूं । मैं एक बेटी, एक बहन, एक बुआ, एक चचेरी बहन, एक भतीजी, और एक नातिन हूं । … बेशक मैं अपने परिवार की एकमात्र जीवित सदस्य हूं, फिर भी मैं परमेश्वर के परिवार की सदस्या हूं ।’’[5]

इस पर विचार करें
कैसे ‘‘परिवारः दुनिया के लिये एक घोषणा’’ दस्तावेज हमारे समय के लिये है ?

टिप्पणियां

1. Bonnie L. Oscarson, “Defenders of the Family Proclamation,” *Liahona,* मई 2015, 14–15 ।
2. “The Family: A Proclamation to the World,” *Liahona,* नवं. 2010, 129 ।
3. Carole M. Stephens, “The Family Is of God,” *Liahona,* मई 2015, 11 ।
4. Nicole Seymour, “‘The Family: A Proclamation to the World’ reaches 10-Year Milestone, *Liahona,* नवं. 2005, 127 ।
5. Barbara Thompson, in *Daughters in My Kingdom: The History and Work of Relief Society* (2011), 148 ।

© 2016 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/15 । अनुवाद अनुमतिः 6/15 । *Visiting Teaching Message, January 2016* का अनुवाद । Hindi । 12861 294